M. T. B. COLLEGE, SURAT
Manuscripts Library

No. Ref.
Ser. 1176

Title: Sloka Samgraha

1176

	:	: Ślokasamgraha	: Title
	:	:	: Author
	:	:	: Editor
	:	:	: Year, Vols.
	:	:	: Publisher
1176	:	: Marathi & Sanskrit	: Remarks

श्रीगणेश ॥ स्वराम मंदराग मम बराद र ॥ देराग मम दे राग मम रेती ॥ इति ग
मत्र यसमास ॥ अथवा वाडनीय ॥ वर्गानि संप नक्षत्रा ग्रा या नीभ्यग्रह मे
नक ॥ नम मत्र भकुरं च नाडी च नग्रुआधिकः ॥ १ ॥ द्विजा द्रपालि
क कं टा स्तानो न्त पा शी शां श्रिड ः ॥ वस्य वर्ण ताधीकाः ॥ वश्यं तालि सीह
स्य सर्वे वशा ॥ मेषादीना लोकव्य वहारद्दु स्यादि द्वयं ॥ कन्य क्षर्ता
दूरमं या न तकन्या भवार भाद पि ॥ गणा यन्न न कोना: शष: स्त्रि ष
द्रभिम संस्कृतं ॥ इति रा ॥ इति प्य इति ॥ म न्तु: पञ्चा १ के दूर यो
पयहानी र्नवाल्मंदे ॥ द्विद्वदशा नर्थन्ति त्वंद्वयार न त्र सौख्य
कत ॥ १ ॥ दास्त्रा नमी त्वी स्वपर्नसु ॥ एकनाडी ॥ मध्यनाडी ॥ अ
त्यनाडी ॥ मध्यनाभ्यां म्रसु ॥ एकादी वृध्या गुरु छा गणना ॥ ११ ॥
इतिप्यरीत ॥ ०० ॥ क्रम शा भयो नी ॥ धाभागतम निशि हरव वं
स्तु मुषर श्रुनी कु भोरा च गावी भर मुं कुभ ना रला कु ची
मगुमु चो द्रर चा मावी भीः ॥ भ शी वस्य वशारि चो मुगु भय ॥
सारि वभाम ॥ चमी गुर्मानि त्रा रीसमा ॥ क्रम न अ उ वर्णा कहन्या

मइः ॥ १ ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ गुरवे नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ ॥ रक्षतु लक्ष्मी कुचशात कुंभ कुंभस्थली कुंकुम
पंकिला नाः ॥ बालातपाताम्रक लिद्रकन्याकल्लोल ली लमुखवरीवाहः ॥
॥ १ ॥ आर्या गौर्यादी रूपा शशिशकल शीरा भूषणा श्यामा रे शी कौर्या
भीषा कदाचीत्क्वचीन [illegible] खल्वजु [illegible] नांकार्यरूपादी रूपा धैर्या
धोदार्यशौर्ये शुभगुणगुणितै संयुता तामतन्वा यद्दुर्गा
भवानी हरानाज भगानी भावयाम्य समरंगी मे ॥ १ ॥
श्रीः ॥ अंगुल्याकः कपारं प्रहरति कुरी लेमाधवः कीवस लोनोचक्रीकी कुलो
लोन हिधुरीणिधरः कीद्दीजीं ऊः कणिंद्रः ॥ नाह चाराही मिदी [illegible] दरिकामु
सी स्वयंगपतिर्नी हरी कीकपिद्वार । यवं सत्यभामा भातिवचनं ऽजीत प्रा
सुवक्ष्चक्रपाणी ॥ ३ ॥ सुभाषीत न गीत न युवती चालीलया ॥ यस्मन्न
द्रववोधिनं सर्वे मुक्तो थवा पशु ॥ १ ॥ अथ लक्ष्मीसूक्तं ॥ ॐ ॥ हिरण्यवर्णां
हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां ॥ चंद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मम आवह ॥ तां

॥ नी ॥ ३ ॥ पचमं तु जगन्माता षष्ठमं चैव पार्वति ॥ सप्तमं का
॥ ल रात्री च अष्टमं ब्रह्मचारिणी ॥ ॥ नवमं च मृगाक्षी च दश
॥ मं भद्रकालिनी प्र ठीका ॥ एकादशी तु वाराह्वा जी द्वादशे ऽम्बा दं
॥ बिका ५ ॥ ॥ द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ॥ ते
॥ षां सर्वस्य लिभाला भुग मासैः सिद्धिदा भवेत् ॥ ६ ॥ छ ॥ ॥
॥ श्री ॥ हे अंबिके कये प्रार्थना मी करितों कि लिखे जो कांकुक लुअ
॥ येलो ॥ लेलु नालुं लु सर्व पिनं क्षय यशी ॥ नका पाठ बुरामम
॥ आवनशी ॥ १ ॥ नको बालमोडुं नको लोभतोडुं नको पापज्या
॥ डुं नको धर्मसाडुं ॥ विवेकीं वहुं आवरावें मनाशी नकोपाठ बुरा ॥ २ ॥
॥ लु झालेव पूर्णा समर्पीत अदत्तो स्त्रियासर्व शिव शीमी पाठ वातो ॥ विवेकी
॥ वहु अवगाव मनाशी निकोपाठ सुराम मा ॥ ३ ॥ शालवलेभे

।। काय अन्याय केला त्याको पशी कां तु लादाषसा ला।। तुझें राज्य तु
।। सर्व घिनी स्त्रियां पशी नको पा०।।४।। अगे आम चें थोर झाले ध्वसंवे चें र
।। घुनाथ हे जन्म लेंरत्न उसें।। सकुमार माजस्मसा माउन पाशी।। न को
।। पारखुं राम भाउ जीवनाशी।। ५।। श्री।। श्री।। जगदील क्षणेक्षणेक्षणे क्षणे
।। पदीयकं।। कंदंबकोरक हृदयं व्रजगोपीगोपीतं कुरु।। १।। इंदी नंगाध्या राधी
।। कापणीप्रांबर दरीक लीं दनैं दा नी तटे ननंद नरं नंदन।। २।। इति श्लोक संपूर्ण
।।।। वसंतवासं नकुल मसुकुमार रवयवे ःन मंतिकों ताखहु वीहीत कस्त
।। नुसरणां।। अमंदकं दर्पविरज नीलचीलाकुलतयः वन हर धारा राधां
।। सरसी मीदम्रचे सहचरी।। ३।। इति श्लोक संपूर्ण।। श्री सरस्वत्यै
।। पतलु तापः प्र पतद पव नादट तु तथिनी पठंतु चा गमान्।। जयं
।। तु या गोर्प वदंतु या गोहरि विना न वनमालि तरंगि।। २।। लिंगकमोक ०।।